



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण	27-10-23	3	2-5

## पर्यावरण संरक्षण से स्वस्थ समाज का निर्माण हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन शुरू



चौधरी चरण सिंह कृषि के बैसिक साइंस में आयोजित कॉन्फ्रेंस में उपस्थित लोग। • जागरण

चौधरी चरण सिंह कृषि के बैसिक साइंस में आयोजित नेशनल कॉन्फ्रेंस में संबोधित करते कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज व मंच पर उपस्थित अतिथिगण। जागरण

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि देश गांवों में बसता है और इस समाज का एक बड़ा हिस्सा कृषि व संबंध गतिविधियों पर निर्भर है। किसानों की स्थिति में सुधार के लिए उनकी आजीविका में सुधार, गरीबी कम करना, पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है।

खाद्य सुरक्षा व पर्यावरण संरक्षण का स्वस्थ समाज का कर सकते निर्माण हैं। वह विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के समाज शास्त्र विभाग द्वारा राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एनएचईपी)-आइडीपी प्रोजेक्ट के तहत कृषक समाज के सतत विकास एवं सामाजिक-

### जलवायु परिवर्तन चिंता का

**विषय : सुखदेव सिंह :** अध्यक्ष डा. सुखदेव सिंह ने कहा कि वर्तमान में भारत में खानानों से जुड़ी हुई योजनाओं के सामने दो मुख्य चुनौतियां हैं। पहली कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व दूसरा युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन किसानों व वैज्ञानिकों के लिए एक चिंता का विषय बन गया है। इसके लिए कृषि क्षेत्र से जुड़े शोध संस्थानों को एक मंच पर आकर नवाचारों व प्रौद्योगिकियों की मदद से किसानों के हित के लिए कदम उठाने होंगे।

आर्थिक उत्थान विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में संबोधित कर रहे थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में एनएचईपी-आइडीपी प्रोजेक्ट के राष्ट्रीय समन्वयक डा. नवीन कुमार

### सम्मेलन से संबंधित पुस्तक का विमोचन किया

डा. नवीन कुमार जैन ने युवाओं को खुद का व्यवसाय शुरू करने के लिए राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना-आइडीपी प्रोजेक्ट को अहम बताया। उन्होंने कहा कि इस योजना के तहत शिक्षक और विद्यार्थी लघु कोर्स और प्रशिक्षण लेने के लिए विदेशों के उच्च स्तर के शिक्षण संस्थानों में जाने का अवसर प्राप्त कर रहे हैं। इस दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान जो सिफरिशों कुछ स्वीकृतियां निकलकर आएंगी, वह कृषक समाज के उत्थान में महत्वपूर्ण

भूमिका निभाने का काम करेंगे। समाजशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष डा. विनोद कुमारी ने दो दिवसीय कार्यशाला की रूपरेखा से अवगत कराया। इस दौरान मुख्यातिथि द्वारा सम्मेलन से संबंधित पुस्तक का विमोचन किया। महाविद्यालय के अधिष्ठाता डा. नीरज कुमार ने सभी का स्वागत किया, जबकि डा. जतेश काठपालिया ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। इस कार्यशाला में मंच का संचालन डा. रश्मि त्यागी ने किया।

जैन और उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्रीय संघ के अध्यक्ष डा. सुखदेव सिंह मुख्य वक्ता के तौर पर उपस्थित रहे। मुख्यातिथि प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि

जलवायु परिवर्तन अब ग्लोबल वार्मिंग तक सीमित नहीं रहा। इसके मौसम में आने वाले अप्रत्याशित बदलाव जैसे आंधी, तूफान, सूखा इत्यादि शामिल हैं।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
उमर उजाला	27-10-23	2	1-4

## जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूल रणनीति अपनानी होगी

एचएयू में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में बतौर मुख्य अतिथि बोले वीसी प्रो. कांबोज माई सिटी रिपोर्टर

हिसार। देश का एक बड़ा हिस्सा गांवों में बसता है और कृषि पर निर्भर है। किसानों की स्थिति में सुधार के लिए उनकी आजीविका में सुधार, गरीबी कम करना, पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है। जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूल रणनीति अपनाने की जरूरत है।

यह कहना है कि चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के कुलपति प्रो. वीआर कांबोज का। वे बीरवार को विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के समाज शास्त्र विभाग द्वारा राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एनएचईपी) आईडीपी प्रोजेक्ट के तहत कृषक समाज के सतत विकास एवं सामाजिक-आर्थिक उत्थान विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे।

प्रो. कांबोज ने कहा कि जलवायु परिवर्तन अब ग्लोबल वार्मिंग तक सीमित नहीं रहा। इसके मौसम में आने वाले



एचएयू में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान पुस्तक का विमोचन करते अतिथिगण। स्रोत: संस्थान

अप्रत्याशित बदलाव जैसे आंधी, तूफान, सूखा, बाढ़ शामिल हैं। असमय तापमान का बढ़ना कृषि उत्पादन पर प्रभाव डाल रहा है। जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूल रणनीतियों को अपनाना होगा। बढ़ते तापमान व सूखे के अनुकूल फसल किस्में, मिट्टी की नमी का संरक्षण, पानी की उपलब्धता, रोग-रहित फसल किस्में, फसल विविधिकरण, मौसम का पूर्वानुमान, टिकाऊ फसल उत्पादन प्रबंधन को अपनाने की आवश्यकता है।

मुख्य वक्ता उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्रीय संघ (एनडब्ल्यूआईएसए) के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह ने कहा कि

युवाओं को खुद का व्यवसाय शुरू करने की जरूरत : डॉ. नवीन विशिष्ट अतिथि एनएचईपी-आईडीपी के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. नवीन कुमार जैन ने राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एनएचईपी)-आईडीपी प्रोजेक्ट के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यह प्रोजेक्ट उच्च स्तरीय शिक्षा को मजबूत बनाने, बढ़ावा देने और बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उन्होंने युवाओं को खुद का व्यवसाय शुरू करने की बात कही। समाजशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. विनोद कुमारी ने दो दिवसीय कार्यशाला की रूपरेखा से अवगत कराया। इस दौरान मुख्य अतिथि द्वारा सम्मेलन से संबंधित पुस्तक का विमोचन किया गया। इस मौके पर मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार, डॉ. जतेश काठपालिया, डॉ. रश्मि त्यागी मौजूद रहे।

वर्तमान में भारत में खाद्यानों से जुड़ी हुई योजनाओं के सामने दो मुख्य चुनौतियां हैं। इसके लिए कृषि क्षेत्र से जुड़े शोध संस्थानों को एक मंच पर आकर नवाचारों व प्रौद्योगिकियों की मदद से किसानों के हित के लिए कदम उठाने होंगे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,  
हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

सम्प्रेषण पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरि. भूमि	27-10-23	10	3-6

# जलवायु परिवर्तन अब ग्लोबल वार्मिंग तक सीमित नहीं रहा : वीसी किसानों की आजीविका में सुधार कर हम स्वस्थ समाज का कर सकते हैं निर्माण

हरियाणा कृषि  
विश्वविद्यालय में दो  
दिवसीय राष्ट्रीय  
सम्मेलन शुरू

हरिभूमि व्यूज >> हिंसर

देश गांवों में बसता है और इस समाज का एक बड़ा हिस्सा कृषि व संबन्ध गतिविधियों पर निर्भर है। किसानों की स्थिति में सुधार के लिए उनकी आजीविका में सुधार, गरीबी कम करना, पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है। यह बात हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कही। वे विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के समाज शास्त्र विभाग द्वारा राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परिषद (एनएचईपी)-आईडीपी प्रोजेक्ट के तहत कृषक समाज के सत विकास एवं सामाजिक-आर्थिक उत्थान विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में बतौर मुख्यातिथि प्रतिभागियों को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान विशिष्ट अतिथि के रूप में



हिंसर। पुस्तक का विमोचन करते इकवि कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज व अन्य।

फोटो: हरिभूमि

एनएचईपी-आईडीपी प्रोजेक्ट के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. नवीन कुमार जैन और उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्रीय संघ (एनइब्ल्यूआईएसए) के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह मुख्य वक्ता के तौर पर उपस्थित रहे।

मुख्यातिथि प्रो. बीआर काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि जलवायु परिवर्तन अब ग्लोबल वार्मिंग तक सीमित नहीं रहा, इसके मौसम में आने वाले अप्रत्याशित बदलाव जैसे आंधी, तूफान, सूखा, बाढ़ इत्यादि शामिल हैं। असमय तापमान का बढ़ना कृषि उत्पादन पर प्रभाव डालता है। इसलिए

जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूल रणनीतियों जैसे कि बढ़ते तापमान व सूखे के अनुकूल फसल किस्में, मिट्टी की नमी का संरक्षण, पानी की उपलब्धता, रोग-रहित फसल किस्में, फसल विविधकरण, मौसम का पूर्वानुमान, टिकाऊ फसल उत्पादन प्रबंधन को अपनाने की आवश्यकता है।

## जलवायु परिवर्तन चिंता का विषय : डॉ. सिंह

मुख्य वक्ता एनइब्ल्यूआईएसए के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह ने कहा कि वर्तमान में भारत में खाद्यान्नों से

## पुस्तक का किया विमोचन

इस दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान जो डिफरेंस कृषि स्वैच्छिक मिशन के तहत, यह कृषक समाज के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का काम करेंगे। समाजशास्त्र विभाग की विश्वविद्यालय डॉ. विवेक कुमारी ने दो दिवसीय कार्यशाला की रूपरेखा से अवगत कराया। इस दौरान मुख्यातिथि द्वारा सम्मेलन से संबंधित पुस्तक का विमोचन किया गया। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अध्यापक डॉ. नीरज कुमर ने स्त्री का उत्पादन किया, जबकि डॉ. जितेश कठपणिया ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। इस कार्यक्रम में मंच का संचालन डॉ. रविश रवानी ने किया।

जुड़ी हुई योजनाओं के सामने दो मुख्य चुनौतियां हैं।

पहली कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व दूसरी बुकाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना है। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन किसानों व

वैज्ञानिकों के लिए एक चिंता का विषय बन गया है। इसके लिए कृषि क्षेत्र से जुड़े शोध संस्थानों को एक मंच पर आकर नवाचारों व प्रौद्योगिकियों की मदद से किसानों के हित के लिए कदम उठाने होंगे।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	27-10-23	2	5-8

## भास्कर खास • हकृति में दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का वीसी ने किया शुभारंभ खाद्य सुरक्षा और पर्यावरण संरक्षण से स्वस्थ समाज का कर सकते हैं निर्माण : प्रो. काम्बोज

भास्कर न्यूज | हिंसार

देश गांवों में बसता है और इस समाज का एक बड़ा हिस्सा कृषि व संबन्ध गतिविधियों पर निर्भर है। किसानों की स्थिति में सुधार के लिए उनकी आजीविका में सुधार, गरीबी कम करना, पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है। यह विचार एचएचपी के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने आईडीपी प्रोजेक्ट के तहत राष्ट्रीय सम्मेलन में बतौर मुख्यातिथि के रूप में व्यक्त किया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में एनएचआईपी-आईडीपी प्रोजेक्ट के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. नवीन कुमार जैन रहे। मुख्य वक्ता के रूप में उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्रीय संघ (एनडब्ल्यूआईएसए) के अध्यक्ष



दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन से संबंधित पुस्तक का विमोचन करते हुए।

डॉ. सुखदेव सिंह ने शिरकत की। मुख्यातिथि प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि जलवायु परिवर्तन अब ग्लोबल वार्मिंग तक सीमित नहीं रहा। असमय तापमान का बढ़ना कृषि उत्पादन पर प्रभाव डालता है। जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूल रणनीतियों जैसे कि बढ़ते तापमान व सूखे के अनुकूल फसल किस्में, मिट्टी की नमी का संरक्षण, पानी की उपलब्धता, टिकाऊ फसल उत्पादन प्रबंधन को अपनाने की

आवश्यकता है। उन्होंने समाजशास्त्र व कृषि क्षेत्र से जुड़े विशेषज्ञों से आह्वान किया कि कृषि क्षेत्र में नवीनतम तकनीक का इस्तेमाल किया जाए ताकि जलवायु परिवर्तन से हो रहे दुष्प्रभावों व उनसे पैदा हो रही चुनौतियों से निपटा जा सके।

मुख्य वक्ता उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्रीय संघ (एनडब्ल्यूआईएसए) के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह ने कहा वर्तमान में भारत में खाद्यान्नों से जुड़ी हुई

योजनाओं के सामने दो मुख्य चुनौतियां हैं। पहली कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व दूसरा युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना। उन्होंने बताया जलवायु परिवर्तन किसानों व वैज्ञानिकों के लिए एक चिंता का विषय बन गया है। इसके लिए कृषि क्षेत्र से जुड़े शोध संस्थानों को एक मंच पर आकर नवाचारों व प्रौद्योगिकियों की मदद से किसानों के हित के लिए कदम उठाने होंगे। विशिष्ट अतिथि एनएचआईपी-आईडीपी के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. नवीन कुमार जैन ने राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एनएचआईपी) आईडीपी प्रोजेक्ट के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। मुख्यातिथि द्वारा सम्मेलन से संबंधित पुस्तक का विमोचन किया गया। कार्यक्रम में मंच संचालन डॉ. रश्मि त्यागी ने किया।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम

अज्ञात समाचार

दिनांक

27-10-23

पृष्ठ संख्या

5

कॉलम

1-4

## किसानों की आजीविका में सुधार, खाद्य सुरक्षा व पर्यावरण संरक्षण कर हम स्वस्थ समाज का कर सकते हैं निर्माण : प्रो. काम्बोज

हिसार, 26 अक्टूबर (बिरेन्द्र वर्मा): देश गाँवों में बसता है और इस समाज का एक बड़ा हिस्सा कृषि व संबंध गतिविधियों पर निर्भर है। किसानों की स्थिति में सुधार के लिए उनकी आजीविका में सुधार, गरीबी कम करना, पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के समाज शास्त्र विभाग द्वारा राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एनएचईपी)-आईडीपी प्रोजेक्ट के तहत कृषक समाज के सतत विकास एवं सामाजिक-आर्थिक उन्नयन विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में बतौर मुख्यातिथि प्रतिभागियों को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान विशिष्ट अतिथि के रूप में एनएचईपी-आईडीपी प्रोजेक्ट के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. नवीन कुमार



दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन से संबोधित पुस्तक का विमोचन करते हुए प्रो. काम्बोज व अन्य।

जैन और उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्रीय संघ (एनडब्ल्यूआईएसए) के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह मुख्य वक्ता के तौर पर उपस्थित रहे। मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि जलवायु परिवर्तन अब ग्लोबल वार्मिंग तक सीमित नहीं रहा, इसके मौसम में आने वाले अप्रत्याशित बदलाव जैसे आंधी, तूफान, सूखा, बाढ़ इत्यादि शामिल हैं। असमय तापमान का बढ़ना कृषि उत्पादन पर प्रभाव डालता है। इसलिए जलवायु परिवर्तन को चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूल रणनीतियों जैसे कि बढ़ते तापमान व सूखे के अनुकूल फसल किस्में, भिन्नी

की नमी का संरक्षण, पानी की उपलब्धता, रोग-रहित फसल किस्में, फसल विविधिकरण, मौसम का पूर्वानुमान, टिकाऊ फसल उत्पादन प्रबंधन को अपनाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि हम एक ऐसा भविष्य बनाए जहाँ हम प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व रखें, जहाँ कोई भी पीछे न हटे और जहाँ समृद्धि की कोई सीमा न हो। हमें अपने पर्यावरण के प्रति चेतना और करुणा पैदा करनी चाहिए। मुख्य वक्ता उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्रीय संघ (एनडब्ल्यूआईएसए) के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह ने कहा कि वर्तमान में भारत में खाद्यान्नों से जुड़ी हुई

योजनाओं के सामने दो मुख्य चुनौतियाँ हैं। पहली कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व दूसरा युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना है। विशिष्ट अतिथि एनएचईपी-आईडीपी के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. नवीन कुमार जैन ने राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एनएचईपी)-आईडीपी प्रोजेक्ट के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यह प्रोजेक्ट उच्च स्तरीय शिक्षा को मजबूत बनाये, बढ़ावा देने और बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उन्होंने युवाओं को खुद का व्यवसाय शुरू करने के लिए इस योजना को अहम बताया। इस दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान जो सिफारिशें कुछ स्वीकृतियाँ निकलकर आयीं, वह कृषक समाज के उन्नयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का काम करेंगी। समाजशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. विनोद कुमारी ने दो दिवसीय कार्यशाला की रूपरेखा से अवगत कराया।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पंजाब केसरी	27-10-23	4	1-6

## जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूल रणनीति अपनाने का आह्वान

हकृषि के राष्ट्रीय सम्मेलन में की जाएगी कई कृषि क्षेत्र को लेकर सिफारिशें, जलवायु परिवर्तन से निपटना है तो करना होगा नवीनतम तकनीक का इस्तेमाल : प्रो. काम्बोज

हिसार, 26 अक्टूबर (राठी): जलवायु परिवर्तन अब ग्लोबल चार्जिंग तक सीमित नहीं रहा, इसके मौसम में आने वाले अप्रत्याशित बदलाव जैसे आंधी, सूखे, बाढ़ इत्यादि शामिल हैं। असमय तापमान का बढ़ना कृषि उत्पादन पर प्रभाव डालता है।

इसलिए जलवायु परिवर्तन को चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूल रणनीतियों जैसे कि बढ़ते तापमान व सूखे के अनुकूल फसल किस्में, मिट्टी की नमी का संरक्षण, पानी की उपलब्धता, रोग-रहित फसल किस्में, फसल विविधिकरण, मौसम का पूर्वानुमान, टिकाऊ फसल उत्पादन प्रबंधन को अपनाने की आवश्यकता है।

वे विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के समाज शास्त्र विभाग द्वारा राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एन.ए.एच.ई.पी.)-आई.डी.पी. प्रोजेक्ट के तहत कृषक



हकृषि में आयोजित 2 दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान मंच पर मौजूद मुख्यातिथि एवं (दाएं) उपस्थित शिक्षाविद, वैज्ञानिक व विद्यार्थी।



### 2 मुख्य चुनौतियों से निपटना होगा : डा. सुखदेव

मुख्य वक्ता उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्रीय संघ के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह ने कहा कि वर्तमान में भारत में खेतों से जुड़ी हुई योजनाओं के सामने 2 मुख्य चुनौतियां हैं। पहली कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व दूसरा युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना है।

उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन किसानों व वैज्ञानिकों के लिए एक चिंता का विषय बन गया है। इसके लिए कृषि क्षेत्र से जुड़े शोध संस्थानों को एक मंच पर आकर नवाचारों व प्रौद्योगिकियों की मदद से किसानों के हित के लिए कदम उठाने होंगे। उन्होंने कहा कि अगर हम आने वाली पीढ़ियों के लिए कुछ छोड़ना चाहते हैं तो हमें पर्यावरण संरक्षण जैसी मुहिम को अपनाना होगा।

समाज के सतत विकास एवं सामाजिक-आर्थिक उत्थान विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में बतौर मुख्यातिथि प्रतिभागियों को संबोधित कर रहे थे।

इस दौरान विशिष्ट अतिथि के रूप में एन.ए.एच.ई.पी.-आई.डी.पी.

प्रोजेक्ट के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. नवीन कुमार जैन और उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्रीय संघ के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह मुख्य वक्ता के तौर पर उपस्थित रहे। इस 2 दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान जो सिफारिशें व कुछ स्वीकृतियां

निकलकर आएगी, वह कृषक समाज के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का काम करेंगे।

समाजशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. विनोद कुमारी ने 2 दिवसीय कार्यशाला की रूपरेखा से अवगत कराया। इस कार्यशाला में मंच

### ज्वलंत विषयों पर चर्चा कर हल निकाला जाएगा: डा. नवीन

विशिष्ट अतिथि डॉ. नवीन कुमार जैन ने राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना प्रोजेक्ट के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यह प्रोजेक्ट उच्च स्तरीय शिक्षा को मजबूत बनाने, बढ़ावा देने और बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

उन्होंने बताया कि आज के सम्मेलन का विषय बहुत महत्वपूर्ण है, जिसमें समाज से जुड़े ज्वलंत विषयों पर चर्चा कर हल निकाला जाएगा। सामाजिक समस्याएं जैसे पर्यावरण परिवर्तन, खाद्य सुरक्षा, खाद्य भंडारण, सामाजिक जागरूकता जैसे विषयों का निवारण करने के लिए बाहर के विभिन्न शिक्षण संस्थानों के साथ हमें एकजुट होकर काम करना होगा।

का संचालन डॉ. रश्मि त्यागी ने किया। प्रो. काम्बोज ने उपस्थित समाजशास्त्र व कृषि क्षेत्र से जुड़े विशेषज्ञों से आह्वान किया कि कृषि क्षेत्र में नवीनतम तकनीक का इस्तेमाल किया जाए, ताकि जलवायु परिवर्तन से हो रहे दुष्प्रभावों व उनसे पैदा हो

रही चुनौतियों से निपटा जा सके। इसमें समाजशास्त्र क्षेत्र से जुड़े वैज्ञानिक व कृषि वैज्ञानिक अहम भूमिका अदा कर न केवल पॉलिसी प्लानर, बल्कि कृषकों व आम जनता को कृषि क्षेत्र से जुड़े नवाचारों, प्रौद्योगिकियों से अवगत करवा सकते हैं।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक रिश्तूत	27-10-23	5	4-5

## हकृवि में दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन

### जलवायु परिवर्तन ग्लोबल वार्मिंग तक सीमित नहीं : काम्बोज

हिसार, 26 अक्टूबर (हप्र)

जलवायु परिवर्तन अब ग्लोबल वार्मिंग तक सीमित नहीं रहा, इसके मौसम में आने वाले अप्रत्याशित बदलाव जैसे आंधी, तूफान, सूखा, बाढ़ इत्यादि शामिल हैं। असमय तापमान का बढ़ना कृषि उत्पादन पर प्रभाव डालता है। इसलिए जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूल रणनीतियों जैसे कि बढ़ते तापमान व सूखे के अनुकूल फसल किस्में, मिट्टी की नमी का संरक्षण, पानी को उपलब्धता, रोग-रहित फसल किस्में, फसल विविधकरण, मौसम का पूर्वानुमान, टिकाऊ फसल उत्पादन प्रबंधन को अपनाने की आवश्यकता है।

यह बात चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के समाज शास्त्र विभाग द्वारा राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एनएएचईपी)-आईडीपी प्रोजेक्ट के तहत कृषक समाज के सतत विकास एवं सामाजिक-आर्थिक उत्थान विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में बतौर मुख्यातिथि प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कही। इस दौरान विशिष्ट अतिथि के रूप में एनएएचईपी-आईडीपी प्रोजेक्ट के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. नवीन कुमार जैन और उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्रीय संघ (एनडब्ल्यूआईएसए) के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह मुख्य वक्ता के तौर पर उपस्थित रहे।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	27.10.2023	--	--

## किसानों की आजीविका में सुधार, खाद्य सुरक्षा व पर्यावरण संरक्षण कर हम स्वस्थ समाज का कर सकते हैं निर्माण : प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार। देश गांवों में बसता है और इस समाज का एक बड़ा हिस्सा कृषि व संबन्ध गतिविधियों पर निर्भर है। किसानों की स्थिति में सुधार के लिए उनकी आजीविका में सुधार, गरीबी कम करना, पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना और खाद्य सुरक्षा

**हकूवि में दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन शुरू**

सुनिश्चित करना आवश्यक है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के समाज शास्त्र विभाग द्वारा राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना

आईडीपी प्रोजेक्ट के तहत कृषक समाज के सतत विकास एवं सामाजिक-आर्थिक उत्थान विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में बतौर मुख्यातिथि प्रतिभागियों को



संबोधित कर रहे थे। इस दौरान विशिष्ट अतिथि के रूप में एनएचईपी-आईडीपी प्रोजेक्ट के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. नवीन कुमार जैन और उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्रीय संघ (एनडब्ल्यूआईएसए) के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह मुख्य वक्ता के



तौर पर उपस्थित रहे। मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि जलवायु परिवर्तन अब ग्लोबल वार्मिंग तक सीमित नहीं रहा, इसके मौसम में आने वाले अप्रत्याशित बदलाव जैसे आंधी, तूफान, सूखा, बाढ़ इत्यादि शामिल

हैं। असमय तापमान का बढ़ना कृषि उत्पादन पर प्रभाव डालता है। इसलिए जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अनुकूल रणनीतियों जैसे कि बढ़ते तापमान व सूखे के अनुकूल फसल किस्में, मिट्टी की नमी का संरक्षण, पानी की उपलब्धता, रोग-रहित फसल किस्में, फसल विविधिकरण, मौसम का पूर्वानुमान, टिकाऊ फसल उत्पादन प्रबंधन को अपनाने की आवश्यकता है।





# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	26.10.2023	--	--

## चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन शुभ किसानों की आजीविका में सुधार, खाद्य सुरक्षा व पर्यावरण संरक्षण कर हम स्वस्थ समाज का कर सकते हैं निर्माण : प्रो. बी.आर. काम्बोज

समस्त हरियाणा न्यूज  
हिसार, 26 अक्टूबर। देश गांवों में बसता है और इस समाज का एक बड़ा हिस्सा कृषि व संबन्ध गतिविधियों पर निर्भर है। किसानों की स्थिति में सुधार के लिए उनकी आजीविका में सुधार, गरीबी कम करना, पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। ये विश्वविद्यालय के नीरज विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के सभाध्यक्ष विभाग द्वारा राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परिषद (एनएचईपी)-आइडीपी प्रोजेक्ट के तहत कृषक समाज के सतत विकास एवं सामाजिक-आर्थिक उन्नयन विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में वक्ता मुख्यातिथि प्रतिभागियों को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान विरिष्ठ अतिथि के रूप में एनएचईपी-आइडीपी प्रोजेक्ट के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. नवीन कुमार जैन और उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाज शास्त्रीय संघ (एन डब्ल्यू आई एसए) के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह मुख्य बक्ता के तौर पर उपस्थित रहे। मुख्यातिथि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि जलवायु परिवर्तन अब ग्लोबल वार्मिंग तक सीमित नहीं रहा, इसके दौरान में आने वाले अप्रत्याशित बदलाव जैसे आंधी, तूफान, सूखा, बड़बूद इत्यादि सामिल हैं। अलग-अलग तापमान का बदलाव कृषि उत्पादन पर प्रभाव डालता है। इसलिए जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों

से निपटने के लिए अनुकूल रणनीतियों जैसे कि बढ़ते तापमान व सूखे के अनुकूल फसल किस्में, मिट्टी की नमी का संरक्षण, पानी की उपलब्धता, रोग-रहित फसल किस्में, फसल विविधता करण, भीसम का पूर्वानुमान, टिकाऊ फसल उत्पादन प्रबंधन को अपनाए की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि हम एक ऐसा भविष्य बनाए जहां हम प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व रखें, जहां कोई भी पीछे न सूटे और जहां समृद्धि की कोई सीमा न हो। हमें अपने पर्यावरण के प्रति चेतना और करुणा पैदा करनी चाहिए। लोगों को प्रेरित करना चाहिए और स्थानीय विकास के लिए नवाचारों का निर्माण करना चाहिए। मुख्यातिथि ने उपस्थित समाजशास्त्र व कृषि क्षेत्र से जुड़े विशेषज्ञों से आग्रह किया कि कृषि क्षेत्र में नवीनतम तकनीक का इस्तेमाल किया जाए ताकि जलवायु परिवर्तन से हो रहे दुष्प्रभावों व उनसे पैदा हो रही चुनौतियों से निपटा जा सके। इसमें समाजशास्त्र क्षेत्र से जुड़े वैज्ञानिक व कृषि वैज्ञानिक अहम भूमिका अदा कर न केवल पारंपरिक पध्दत बल्कि कृषकों व आम जनता की कृषि क्षेत्र से जुड़े नवाचारों, प्रौद्योगिकियों से अवगत कराया सकते हैं। मुख्य बक्ता उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्रीय संघ (एन डब्ल्यू आई एसए) के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह ने कहा कि वर्तमान में भारत में खाद्यकों से जुड़ी हुई योजनाओं के सामने दो मुख्य चुनौतियां हैं। पहली कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व दूसरी चुनौती की कृषि व्यवसाय की तरफ



आकर्षित करना है। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन किसानों व वैज्ञानिकों के लिए एक चिंता का विषय बन गया है। इसके लिए कृषि क्षेत्र से जुड़े शोध संस्थानों को एक मंच पर आकर नवाचारों व प्रौद्योगिकियों की मदद से किसानों के हित के लिए कदम उठाने होंगे। उन्होंने कहा कि अगर हम अपने वाली पीढ़ियों के लिए कुछ छोड़ना चाहते हैं तो हमें पर्यावरण संरक्षण जैसी मुश्किल को अपनाना होगा। विरिष्ठ अतिथि एन एचईपी-आइडीपी के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. नवीन कुमार जैन ने राष्ट्रीय कृषि शिक्षा परिषद (एन एचईपी)-आइडीपी प्रोजेक्ट के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यह प्रोजेक्ट उच्च स्तरीय शिक्षा को

सुव्यवस्थित बनाए, बढ़ावा देने और बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उन्होंने युवाओं को खुद का व्यवसाय शुरू करने के लिए इस योजना को अहम बताया। उन्होंने बताया कि इस योजना के तहत शिक्षक और विद्यार्थी लघु कोर्स और प्रशिक्षण लेने के लिए विदेशों के उच्च स्तर के शिक्षण संस्थानों में जाने का अवसर प्राप्त कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि आज के सम्मेलन का विषय बहुत महत्वपूर्ण है, जिसमें समाज से जुड़े ज्वलंत विषयों पर चर्चा कर हम निकलता आया। सामाजिक समस्याएं जैसे पर्यावरण परिवर्तन, खाद्य सुरक्षा, खाद्य भंडारण, सामाजिक जागरूकता जैसे विषयों का निवारण करने के लिए बाहर के विभिन्न शिक्षण संस्थानों के साथ हमें

एकजुट होकर काम करना होगा। इस दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान जो विचारों को कुछ स्वकृतियां निकलकर आया, वह कृषक समाज के उन्नयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का काम करेंगे। समाजशास्त्र विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. विनोद कुमारी ने दो दिवसीय कार्यशाला की रूपरेखा से अवगत कराया। इस दौरान मुख्यातिथि द्वारा सम्मेलन से संबंधित पुस्तक का विमोचन किया गया। मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. नीरज कुमार ने सभी का स्वागत किया, जबकि डॉ. जयेश कश्यपसिंघा ने धन्यवाद प्रस्ताव पारित किया। इस कार्यशाला में मंच का संचालन डॉ. हरिन त्यागी ने किया।



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
चिराग टाइम्स	26.10.2023	--	--

चिराग टाइम्स

अक्टूबर 2023

2

## किसानों की आजीविका में सुधार, खाद्य सुरक्षा व पर्यावरण संरक्षण का हम स्वस्थ समाज का कर सकते हैं निर्माण : प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार ( चिराग टाइम्स ) हिसार। देश गांधी में आता है और हम समाज का एक बहुत हिस्सा कृषि व संबंध प्रतिष्ठानियों पर निर्भर है। किसानों की स्थिति में सुधार के लिए इनको आजीविका में सुधार, गरीबी कम करना, पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है। वे किसान चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने कहा कि वे विश्वविद्यालय के शैक्षिक विज्ञान एवं तकनीकी महाविद्यालय के समस्त छात्र शिक्षण द्वारा राष्ट्रीय कृषि उन्नयन शिक्षा परिषद (एनएचएचआईपी) आईडीपी प्रोजेक्ट के तहत कृषक समाज के समस्त विकास एवं सामाजिक-आर्थिक उन्नयन विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में कांति मुहूर्तलिपि प्रतिभागियों को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान विशिष्ट अतिथि के रूप में एनएचएचआईपी-आईडीपी प्रोजेक्ट के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. कर्पण कुमार जैन और उपा-प्राध्यापिका भारतीय समाजशास्त्रीय शोध (एचएसएसएआईएसए) के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह मुद्या लख के तौर पर उपस्थित रहे।

सुजातिनिधि प्रो. बी.आर. काम्बोज ने अपने संबोधन में कहा कि जनकपु परिवर्तन अब ग्लोबल अर्थीय तक सीमित नहीं रहा, इसके सीध में आने वाले अप्रत्याशित बदलाव जैसे ओपी, कृषक, सूखा, बाढ़ इत्यादि साक्षित हैं। असमय सामान का बढ़ना कृषि उत्पादन पर प्रभाव डालता है। इसलिए जनकपु परिवर्तन को चुनौतियों में निपटने के लिए अनुकूल समर्थकों जैसे कि पशु सामान्य व सूखे के अनुकूल फसल विकल्प, मिट्टी को नमी का संरक्षण, पानी को उपलब्धता, शीत-शीत फसल विकल्प, फसल विविधिकरण, सीधम का पूर्वावृत्तन, रिकार्ड फसल उत्पादन प्रबंधन को अपनाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि हम एक एक धीरे-धीरे इन सब चुनौतियों के साथ सहा-अधिकार रखें, जहाँ कोई भी पीछे न हटें और जहाँ समृद्धि की कोई सीमा न हो। हमें अपने पर्यावरण के प्रति चेतना और जनकपु पैदा करनी चाहिए। लोगों को प्रेरित करना चाहिए और स्वस्थ विकास के लिए नवाचारों का निर्माण करना चाहिए। मुझका उपा-



प्राप्त की भारतीय समाजशास्त्रीय शोध (एचएसएसएआईएसए) के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह ने कहा कि किसानों में भारत में खाद्यान्नों में बढ़ोतरी हुई योजनाओं के सामने दो मुख्य चुनौतियाँ हैं। पहली कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व दूसरा युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना है। उन्होंने बताया कि जनकपु परिवर्तन किसानों व वैज्ञानिकों के लिए एक चिंता का विषय बन गया है। इसके लिए कृषि क्षेत्र से जुड़े शोध संस्थानों को एक साथ पर आकर नवाचारों व प्रौद्योगिकियों को महारत में किसानों के हित व लिए काम करने होंगे। उन्होंने कहा कि अगर हम अपने गांधी पीछे नें के लिए कुछ छोड़ना चाहते हैं तो हमें पर्यावरण संरक्षण जैसी कृषि को

अवश्य होगा। विशिष्ट अतिथि एनएचएचआईपी-आईडीपी के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. कर्पण कुमार जैन ने राष्ट्रीय कृषि उन्नयन शिक्षा परिषद (एनएचएचआईपी)-आईडीपी प्रोजेक्ट के बारे में विशदार्थपूर्ण जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यह प्रोजेक्ट उच्च शैक्षिक शिक्षा को मजबूत करने, बढ़ावा देने और बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उन्होंने युवाओं को चुनौती का अवसर साहस करने के लिए इस योजना को अहम बताया। उन्होंने बताया कि इस योजना के तहत किसान और किसानों समुदायों और प्रतिष्ठान लेने के लिए विदेशों के उच्च स्तर के शिक्षण संस्थानों में जाने का अवसर प्राप्त कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि आज के



# चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स न्यूज	26.10.2023	--	--

## किसानों की आजीविका में सुधार व पर्यावरण संरक्षण कर हम स्वस्थ समाज का कर सकते हैं निर्माण : प्रो. काम्बोज

सिटी पल्स न्यूज, हिंसारा देश गांवों में बसता है और इस समाज का एक बड़ा हिस्सा कृषि व संबध गतिविधियों पर निर्भर है। किसानों की स्थिति में सुधार के लिए उनकी आजीविका में सुधार, गरीबी कम करना, पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देना और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना आवश्यक है। ये विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी.आर. काम्बोज ने व्यक्त किए। वे विश्वविद्यालय के मौलिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के समाज शास्त्र विभाग द्वारा राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एनएचईपी)-आईडीपी प्रोजेक्ट के तहत कृषक समाज के सतत विकास एवं सामाजिक-आर्थिक उत्थान विषय पर आयोजित



वे दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन से संबंधित पुस्तक का विमोचन करते हुए।

राष्ट्रीय सम्मेलन में बतौर मुखातिथि प्रतिभागियों को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान विशिष्ट अतिथि के रूप में एनएचईपी-आईडीपी प्रोजेक्ट के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. नवीन कुमार जैन और उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्री संघ

(एनडब्ल्यूआईएसए) के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह मुख्य वक्ता के तौर पर उपस्थित रहे।

मुख्य वक्ता उत्तर-पश्चिमी भारतीय समाजशास्त्री संघ (एनडब्ल्यूआईएसए) के अध्यक्ष डॉ. सुखदेव सिंह ने कहा कि वर्तमान

में भारत में खाद्यान्नों से जुड़ी हुई योजनाओं के सामने दो मुख्य चुनौतियां हैं। पहली कम लागत में कृषि का उत्पादन बढ़ाना व दूसरा युवाओं को कृषि व्यवसाय की तरफ आकर्षित करना है। उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन किसानों व वैज्ञानिकों के लिए एक चिंता का विषय बन गया है। इसके लिए कृषि क्षेत्र से जुड़े शोध संस्थानों को एक मंच पर आकर नवाचारों व प्रौद्योगिकियों की मदद से किसानों के हित के लिए कदम उठाने होंगे।

विशिष्ट अतिथि एनएचईपी-आईडीपी के राष्ट्रीय समन्वयक डॉ. नवीन कुमार जैन ने राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना (एनएचईपी)-आईडीपी प्रोजेक्ट के बारे में जानकारी दी।